बिहारी लाल

1720 / 1663

रीतिकाल के सर्वाधिक लोकप्रिय तथा श्रृंगार रस के सर्वश्रेष्ठ कवि बिहारीलाल का जन्म 1596 ई० में ग्वालियर जिले के बसुआ गोविन्दपुर नामक ग्राम में हुआ था। इनकी यौवन का दिन ससुराल में बीता तत्पश्चात् वे जयपुर के महाराजा जयसिंह के दरबार के कवि हुए। जयसिंह अपने समय के अत्यंत प्रसिद्ध कला-प्रेमी और रसिक राजाओं में एक थे। कहा जाता है कि राजा जयसिंह जब अपनी दूसरी नयी शादी किए तब उस रानी के सौन्दर्य में इतना विलीन हो गए कि इधर राज-पाट को कोई देखने वाला नहीं था,

BIHARILAL

मंत्री परेशान रहते थे। इस सम्बन्ध में कवि बिहारी का ध्यान राजा जयसिंह की ओर आकृष्ट हुआ, और कवि बिहारी ने एक दोहा लिखकर उस राजा के पास भेजवा दिया, यह दोहा इस प्रकार है-

"नहि पराग, नहि मधुर मधु, नहि विकास इहि काल।
अली कली ही सों बंध्यौं रह्यो आगे कौन हवाल" ॥

इस दोहा ने राजा जयसिंह को बाण के समान प्रभावित किया। राजा जयसिंह रानी को छोड़कर अपने राजकार्य में लग गए। तभी से कवि बिहारी की दोहा चरमउत्कर्ष पर पहुँच गयी।

इस सम्बन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी कहते हैं कि "बिहारी की दोहे की सफलता के कारण, उनकी कल्पना की समाहार शक्ति के साथ साथ भाषा की समास शक्ति है"।

रीतिकाल के अधिकारी विद्वान पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र जी कहते हैं कि "बिहारी के सम्बन्ध में तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं (1) चेष्टाओं और उक्तियों का विधान (2) व्यवस्थित भाषा (3) विदेशी प्रभाव को भारतीय पद्धति के भीतर ग्रहण करने की क्षमता।"

बिहारी की भाषा सहज, कोमल सजी एवं मंजी हुई है। शब्दों का जितना नपा तुला सुन्दर रूप बिहारी की दोहे में मिलता है उतना ब्रजभाषा के किसी अन्य कवि में नहीं मिलता है।

स्पष्ट है कि बिहारी रीतिकाल के सर्वसम्मान जनप्रिय एवं ब्रजभाषा के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त कवि हैं। इनके द्वारा लिखा गया दोहा नीतिपरक और मार्गदर्शक भी है जैसे में ये दोहा उद्धरण योग्य हैं

"बढ़े न हूजै गुणन बिनु बिरद बड़ाई
कहत धतूरे को कनक, गहनो गढ़ो न"

सत्येन्द्र कुमार